शंकर का जीवन-दर्शन

स्वामी कृष्णानन्द

द डिवाइन लाइफ सोसायटी
शिवानन्द आश्रम, ऋषिकेश, भारत

वेबसाइट: www.swami-krishnananda.org

मनुष्य केवल रोटी से नहीं जीता; वह भीतर की आत्मा से जीता है। यह भौतिक शरीर छूट जाने के बाद भी आध्यात्मिक भूख बनी रहती है। जब तक ज्ञान और पूर्णता की यह जन्मजात भूख शांत नहीं होती, विश्राम की कोई आशा नहीं। संत, ऋषि और अवतार मनुष्य को समय-समय पर आवश्यक आध्यात्मिक आहार देते हैं। शंकर ऐसे ही एक महान पोषक हैं। शंकर ने ही जीवन के उलझे प्रश्नों का अंतिम और संतोषजनक उत्तर दिया—आंतरिक, बाह्य और उनके परस्पर संबंध से जुड़े प्रश्न, जो अपने विस्तार में समस्त अस्तित्व को समेटते हैं। द्रष्टा है, दृश्य है, और एक ऐसी वस्तु भी है जो न द्रष्टा हो सकती है न दृश्य—जैसा कि उस सत्य की आवश्यकता से सिद्ध होता है जो न उस व्यक्ति से भिन्न हो सकती है जो द्रष्टा है, न उस संसार से जो दृश्य है—क्योंकि दोनों अपनी परिवर्तनशील, नश्वर और क्रमिक रूपांतरण की प्रकृति के कारण आभास मात्र हैं।

मनुष्य विद्यमान है और वह जानता है कि वह विद्यमान है—उसे अपने अस्तित्व की प्रत्यक्ष अनुभूति है। परन्तु वह यह भी जानता है कि वह एक स्थायी सत्ता नहीं है; कि मृत्यु किसी को नहीं छोड़ती; कि सभी मनुष्यों, पशुओं और पौधों का अंत होता है। वह यह भी जानता है कि जिस संसार में वह है और जो उसके ज्ञान के विषय के रूप में उसके सामने आता है, वह भी विनाश के अधीन है और इसलिए अंततः वास्तविक नहीं है। तो फिर वास्तविक क्या है? यदि मनुष्य एक दिन मरेगा, यदि सभी जीव नष्ट होंगे और यदि सौरमंडलों की समस्त आकाशगंगा सहित यह समस्त संसार टिकने वाला नहीं है—तो वह क्या है जो टिकेगा? यद्यपि यह सत्य है कि जो कुछ दिखाई देता है वह

नष्ट होता है, क्या यह भी सत्य है कि कुछ भी अनश्वर नहीं है? आचार्य शंकर, वह प्रतिभाशाली व्यक्तित्व, आगे आते हैं और मनुष्य की बुद्धि को सांसारिक दृष्टि की बेड़ियों से मुक्त करके ऊपर उठाते हैं जब वे साहसपूर्वक घोषणा करते हैं—यदि सब कुछ अनित्य है, तो कुछ न कुछ नित्य अवश्य होगा; यदि सब कुछ किसी न किसी समय सीमित या समाप्त होगा, तो कुछ ऐसा भी होना चाहिए जिसकी कभी कोई सीमा या अंत न हो। यदि समस्त संसार क्षणभंगुर है, तो ईश्वर का अस्तित्व अनिवार्य है—और केवल वही शाश्वत हो सकते हैं।

शंकर न तो कोई हठवादी थे और न ही केवल एक प्राधिकारवादी—वे एक अत्यंत स्पष्टबुद्धि और उच्च कोटि के तार्किक विचारक थे। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व की वास्तविकता को केवल शास्त्र या परंपरा के आधार पर नहीं, बल्कि प्रत्यक्ष अनुभव और उससे निकाले गए अनुमान के अखंडनीय आधार पर स्थापित किया। यह शंकर का दृढ़ विश्वास है कि जब तक कोई वस्तु टिकने वाली न हो, तब तक कुछ भी नश्वर नहीं कहा जा सकता; कि बिना किसी अंतर्निहित सत्य के कोई आभास संभव नहीं। व्यक्ति की मृत्यु का तथ्य, विचार की परिवर्तनशील प्रकृति और संसार का क्षणिक व्यवहार—यही पर्याप्त है एक ऐसी महान सत्ता के अस्तित्व को स्थापित करने के लिए जो व्यक्ति के साथ न मिटे और संसार के साथ न नष्ट हो। यह परम सत्ता ईश्वर है, और उन्हें जानना ही काल और देश में समस्त वस्तुओं का सत्य जानना है।

मनुष्य की नियति ईश्वर के साथ एकता है, क्योंकि मनुष्य मूलतः ईश्वर से अभिन्न है। मनुष्य संसार का अंग है, और संसार ईश्वर में निहित है—ईश्वर के बिना उसका अस्तित्व नहीं। संसार की वास्तविकता ईश्वर की वास्तविकता है। संसार में जिस भी वस्तु का कोई मूल्य है, वह ईश्वर की प्रकृति से है। शंकर कहते हैं—ईश्वर, अर्थात् ईश्वर, अंततः सभी वस्तुओं से स्वतंत्र है और किसी भी बाह्य स्थिति से संबद्ध नहीं हो सकता। जब उन्हें ऐसे संबद्ध माना जाता है, तब वे संसार के सृष्टा, पालक और संहारक कहलाते हैं। अपने वास्तविक स्वरूप में वे परम पूर्ण, ब्रह्म, सच्चिदानन्द (सत्-चित्-आनन्द) हैं। मनुष्य केवल एक आभास है—उसका सत्य ईश्वर में है। उच्चतम अर्थ में मनुष्य स्वयं ईश्वर ही है; पूर्ण रूप से भ्रम-विमुक्त होने पर जीव ब्रह्म ही है।

तो फिर व्यक्ति, संसार और ईश्वर के बीच क्या संबंध है? शंकर ऐसे किसी भी विचार या अस्तित्व की त्रिपक्षीय प्रकृति का संकेत देने वाले किसी भी शब्द-प्रयोग का निषेध करेंगे। केवल अंधे व्यक्ति—भ्रमित मनुष्य—को संसार ईश्वर से भिन्न लगता है और स्वयं को भी ईश्वर से भिन्न। जिस क्षण पर्दा उठता है, दिखाई देगा कि जो वास्तव में है वह शुद्ध चेतना का एक सागर है—असीम परम सत्ता—जिसमें संसार और व्यक्ति अब पृथक सत्ताएँ नहीं, बल्कि उसकी अनंतता और अमरता की अखंड महिमा में एकीभूत हैं। यही जीवन का महान गन्तव्य है, प्रत्येक के अस्तित्व का उद्देश्य है, सभी आकांक्षाओं और प्रयासों का लक्ष्य है। ब्रह्म ही वास्तविक है; अन्य सब का ब्रह्म से स्वतंत्र कोई अस्तित्व नहीं।

शंकर का अवतरण मानवता की आँखें उस दिव्यातीत आदर्श की ओर खोलने के परम मिशन के साथ हुआ था, जिसकी प्राप्ति के लिए ही जीवन है। मनुष्य से कहा जाता है कि वह अपने जीवन को अनुशासित और व्यवस्थित करे ताकि ईश्वर, आत्मन या ब्रह्म की शाश्वत सत्ता के अनुरूप हो सके—जिसकी प्रत्यक्ष अनुभूति ही इस ब्रह्माण्ड की समस्त गतिविधियों का एकमात्र उद्देश्य है। शंकर सम्पूर्ण मानवजाति के लिए धर्म सिखाते हैं—ब्रह्मानुभव या परम अनुभव का एकमात्र सच्चा धर्म। इस शाश्वत धर्म के अभ्यास का अर्थ है—इसकी पूर्वशर्त के रूप में—अक्रोध, आत्मसंयम, शांति, धैर्य, श्रद्धा और मन की एकाग्रता जैसे गुणों का संवर्धन और पोषण, जिन्हें सत्य के स्पष्ट विवेक और बाह्य विषयों तथा अवस्थाओं से वैराग्य की सहायता से सावधानीपूर्वक अभ्यास करना है। इसका अर्थ है—सत्ता के सार्वभौमिक आत्मत्व के स्वाभाविक परिणाम के रूप में—व्यक्तिगत, सामाजिक, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय शांति का स्वतःस्फूर्त कार्यान्वयन। मानव इतिहास में वास्तव में बहुत कम लोग हुए जिन्होंने इतनी भावना की तीव्रता और समझ की स्पष्टता के साथ इस महान सत्य के सिद्धांत का प्रचार किया—कि अमर आत्मन की अनुभूति में ही व्यक्ति और समाज का वास्तविक सांत्वना निहित है। शंकर-भगवत्पाद को जय हो—जो आँखें खोलने वाले हैं, प्रकाश देने वाले हैं, सांत्वना देने वाले हैं, सीमाबद्धता के घाव को भरने वाले हैं और अज्ञान के रोग का उपचार करने वाले हैं!